फरीदाबाद मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 61 | जुलाई 1993 | 1/-

इस अंक में

- ट्रूव्हील फैक्ट्री
- पोस्टल वरकर
- कैद में मजदूर
- कविता
- समीक्षा
- ओसवाल इंजिनियरिंग

आटो लैम्प

21 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित इस फैक्ट्री में 110 पुरूष और 55 महिला मजदूर काम करते हैं। मजदूरों को प्रति वर्ष 10 परसैन्ट एक्सग्रेशिया के नाम से पैसे देने की यहां 15 साल से परिपाटी बनी हुई थी। इस साल मैनेजमेंट ने 3 परसैन्ट देने की घोषणा की। मजदूरों ने इसका विरोध किया।

मजदूरों के विरोध को कुचलने के लिये मैनेजमेंट ने 2 मई को 4 वरकर सस्पैन्ड कर दिये। फिर भी मजदूरों ने विरोध जारी रखा। इस पर मैनेजमेंट के गुण्डे 24 मई को सुबह फैक्ट्री गेट के अन्दर से एक मुखर मजदूर का अपहरण करके ले गये और उसे बहुत मारा-पीटा – वह वरकर कई दिन बी के अस्पताल में भर्ती रहा।

अपहरण और मार-पीट के खिलाफ मजदूरों ने चक्का जाम कर दिया और फैक्ट्री गेट को घेर कर बैठ गये। मजदूरों ने घटना की रिपोर्ट पुलिस में दर्ज भी करवाई। मैनेजमेंट के गुण्डों के खिलाफ कार्रवाई करने की बजाय पुलिस ने दो दिन बाद जबरन फैक्ट्री का गेट खुलवाया। इतना ही नहीं, पुलिस ने फैक्ट्री के अन्दर डेरा डाला और डरा-धमका कर काम भी शुरू करवाया। मजदूरों को तीन परसैन्ट लेने को भी मजबूर किया गया है।

फिर भी मजदूरों का विरोध जारी रहा। इस पर जून माह में मैनेजमेंट ने मैटेरियल देना बन्द कर दिया है और मजदूरों पर उल्टा आरोप लगा रही है कि मजदूर काम नहीं कर रहे। मजदूर हर रोज ड्यूटी पर आ रहे हैं। डेली कार्ड पंच होते हैं। स्टोर मैटेरियल से भरा पड़ा है पर मैनेजमेंट स्टोर से मैटेरियल नहीं निकाल रही। मजदूरों को हर रोज ड्यूटी के समय आठ घन्टे मक्खियाँ मारनी पड़ रही हैं और मैनेजमेंट की वेतन कटौती तथा छंटनी की धमकियां बोनस में मिल रही हैं।

मैनेजमेंट फैक्ट्री के अन्दर सफाई नहीं करवा रही और अब तो पीने का पानी

(बाकी पेज 4 पर)

पाठकों से

इस अखबार में हम महिला एवं पुरूष मजदूरों के जीवन और आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा में पाठकों की अधिकाधिक भागीदारी के इच्छुक हैं। अपनी फैक्ट्री में, अपनी बस्ती में, अपनी निजी जिन्दगी में अथवा अन्यत्र निगाह में आई ऐसी सामग्री हमें भेजें। हम ऐसे मैटेरियल को प्रकाशित करने की कोशिश करेंगे – नाम देना अथवा नहीं देना लिखनेवालों की इच्छा पर है। अपनी बात छपवाने के लिये आपको कोई पैसे खर्च नहीं करने पड़ेंगे। बेझिझक और विस्तार से अपनी बात हम तक पहुंचायें – स्वयं नहीं मिल सकें तो डाक से हमें भेजें।

इस अखबार में प्रकाशित सामग्री को स्वतंत्रता से पुनः प्रकाशित कर सकते हैं। ऐसे प्रकाशनों की हमें सूचना देंगे तो हमें अच्छा लगे गा।

महंगाई केला खा गई

दुर्भाग्य से कहिये चाहे सौभाग्य से, शटल के उस डिब्बे में भजनमन्डली की दर्दभरी पुकार सुनाई नहीं पड़ रही थी। ताश की टोलियां भी बुझी-बुझी सी खेल रही थी। अधिकतर लोग 8–12 घन्टे की ड्यूटी के बाद बैठे-बैठे ऊंघ रहे थे। कम शोर की वजह से ऐसे में ओखला से चढ़े तीसेक साल के एक मजदूर की एक दुबले-पतले युवा वरकर से बात-चीत के यह अंश हमें सुनाई दिये –

पहला मजदूर : भाई एक बात तो पक्की है। पैसा जो है न वह ठहरता ही नहीं।

युवा वरकर : यह बात तो ठीक है लेकिन अगर...

पहला मजदूर : सुन। छह महीने पहले मेरे साथ एक लड़का काम करता था। पटती थी हमारी। रोज लन्च में हम दोनों बाहर जाते थे। दो-दो केले खाते थे और एक-एक सिगरेट पीते थे। कुछ दिन बाद उसका ब्रेक हो गया और वह किसी और फैक्ट्री में चला गया। दो-तीन दिन पहले वह मिला। बात छिड़ गई तो मुझे वह बोल रहा था कि यार तेरे से अलग होने के बाद से मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया है और लन्च में आजकल केले भी नहीं खाता पर फिर भी यार पैसे उतने ही रहते हैं।

युवा वरकर ने हंस कर हामी भरी।

पहला मजदूर बोलता रहा : और पते की बात यह है कि मैंने भी लन्च में ऐश करनी छोड़ दी। लन्च में मैं गेट के बाहर जाता ही नहीं। फिर भी साला पैसा एक नहीं बचता। और यही बात मैं कहता रहता हूं कि पैसा कम खर्च करो चाहे ज्यादा, रूकना तो उसने है नहीं।

और कोई बात साफ हो या न हो, यह तो स्पष्ट है ही कि हमारे सहयात्री और उनके मित्र के जीवन-स्तर में कुछ गिरावट आई है। बढ़ते भावों ने छह महीने में ही असल तनखा को कम करके दो केलों के रूप में कुछ प्रोटिन-विटामिन-आयरन जो उन मजदूरों को मिलता था वह हड़प लिया है।

एक महिला मजदूर का खत

मैं प्रिमियर आटो, प्लाट नं. 362 सैक्टर 24 में फरवरी 1984 में भर्ती हुई थी। वहां 40 मजदूर काम करते थे जिनमें 7 हम महिलायें थी। इस फैक्ट्री में राजदूत मोटरसाइकिल के रबड़ के पार्ट्स बनते हैं और मैं कटिंग का काम करती थी।

हमें तनखा दस तारीख तक मिल जाती थी। सितम्बर 91 की तनखा जब 17 अक्टूबर तक नहीं दी गई तब सब मजदूर मैनेजर से मिले। मैनेजर ने कहा कि वह कुछ नहीं कर सकता, डायरेक्टर से बात करो। इस पर आदमी तो काम पर लग गये पर हम सात महिलायें डायरेक्टर से मिलने गई। डायरेक्टर ने हमें गाली दे कर भगा दिया।

18 तारीख को हमें फैक्ट्री गेट के अन्दर तो जाने दिया पर काम किसी भी औरत को नहीं करने दिया। ऐसा हफ्ते भर चला। एक बुढ़िया ने हिसाब ले लिया और तीन औरतों को काम दे दिया गया लेकिन मुझे, शान्ति और एक लड़की को काम नहीं दिया गया। 28 अक्टूबर को हम तीन को फैक्ट्री गेट के अन्दर ही नहीं जाने दिया। हम दिन-भर फैक्ट्री गेट पर धूप में बैठी रही। उस दिन मेरा करूआ चौथ का वर्त था और मैं बेहोश हो गई। मेरी सहेली मुझे रिक्शा से बी के अस्पताल ले गई।

हमारी फैक्ट्री में सीटू की यूनियन है। 29 अक्टूबर को हम सीटू दफ्तर गई। लड़की को ड्यूटी पर ले लिया गया। शान्ति और मैंने केस कर दिये।

सितम्बर के और 17 दिन अक्टूबर 91 के वेतन के लिये हमारा केस अब तक चल रहा है। दो साल होने को आये हैं और काम किये हुये दिनों का पैसा शान्ति और मुझे अभी तक नहीं मिला है।

नौकरी के लिये भी हमारा केस अभी चल ही रहा है।

मुझे प्रिमियर आटो में 775 रूपये वेतन मिलता था जो कि उस समय वाले 904 के सरकारी रेट से कम था। ई एस आई कार्ड मुझे कभी नहीं दिया गया। प्रोविडेन्ट फन्ड में मेरा खाता ही नहीं खोला गया। मुझे हफ्ते में एक दिन छुट्टी मिलती थी। साल वाली 29 छुट्टियां भी मुझे मिलती थी।

– कमला रानी

पांच-छह अरब लोगों के हाथों में अर्थपूर्ण भविष्य की कुंजी है – पांच-छह अरब के सचेत सामुहिक हाथों में। मजदूर पक्ष के निर्माण के लिये आवश्यक सचेत सामुहिक एकता में योगदान के उद्देश्य से हम यह अखबार प्रकाशित करते हैं।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद -121001 (यह जगह बाटा चौक के पास है)

शिखा मित्रा, पो. बा. न. 153, मुक्तिदूत विद्यापीठ, रायपुर (मध्य प्रदेश) द्वारा महासमुन्द के. एन. आयल मिल कर्मचारी व मजदूर संघ के श्रमिकों की गिरफ्तारी के समय लिखी कविता हमें डाक से मिली है। लिफाफा खुला हुआ था, उसमें और कोई जानकारी थी तो वह हमें नहीं मिली।

वह खून.....?

हां, सुनो
मैने देखा
खून का छींटा
फटे कपड़ों पर रामू के
और
खाकी वर्दी पर पड़ा था।

तुम मानो या न मानो
मै तो यही कहूंगी कि
वह रामू के सच का खून था।
हक की लड़ाई में बहा खून था –
पूंजीपति के अन्याय शोषण के खिलाफ
मजदूर को बोलने की सजा में –
दिया गया उपहार खून था।

गंदी राजनीति की साजिश को पर्दाफाश करता,
खून का वह छींटा था।

खाकी वर्दीधारी के हाथों में,
देश की सुरक्षा के नाम पे रखे डण्डे से –
किसी निहत्थे, गरीब, दुःखी, दलित, शोषित
पर किये गये दमन प्रहार से बहा
आजादी को देश की, लहुलुहान करता खून था।

क्या.....? वह देश की प्रजातंत्र का खून नहीं था....?
तो
अब समझ गये मेरे देशवासियों....
कैसे प्रजातंत्र में तुम जी रहे हो....?
जिसमें प्रजा हक की लड़ाई,
लड़ नहीं सकती....
झूठे तथ्यों के खिलाफ
अपना सच कबूल नहीं सकती।
पेट पीठ से चिपक जाये फिर भी,
मै भूखी हूं, कह नहीं सकती....।
लाठी गोली बल्लमों से, पीटी गयी लहुलुहान हथेलियों से,
सड़क पर गिरी रोटियों को भी, बटोरकर खा नहीं सकती।
बिखरे खूनों से सनी यह सड़क आजाद भारत की है,
वह कह नहीं सकती।
उफ
क्या.. विडम्बना है....?
जिस सड़क को, गिट्टी पत्थर तोड़कर।
गर्मी की भीषण तपन, कड़कती ठंड, वर्षा की झड़ी को सहकर,
जिस मजदूर की हथेलियों और पैरों ने बनाया था –
वह उस पर हक की लड़ाई में चल नहीं सकता।
गोली लाठी की मार से अकाल मौत की गोद में,
उसी सड़क पर लाश उसका सड़ता।
बोलो... बताओ मुझे... मानवता का खून देखकर भी,
मानव क्यों... मौन धारण कर लेता?

भय आतंक, कोलाहल, प्रश्नों के बीच
खड़ी अपार भीड़
अचानक भीड़ पार कर
मेरी निगाह पड़ी रामू पर
तो
लगा मेरी आंखों के सामने
एक नर कंकाल
ठहाका लगाकर चुप सो गया और
भींचे दांतों से पूछा मुझसे कि
बताओ/मुझे समझाओ कि मेरे देश में
प्रजातंत्र कहां खो गया....?
कहां सो गया....?

जिस दिन सारी खाकी वर्दी
सफेदपोशों के श्वेत वस्त्र
लाल खूनों से सन जायेंगी।
सच मानो/वे नहीं जानते
लाल क्रांति की एक मशाल से
अकाल मौत देती –
हर लाठी, बल्लम और बंदूक
जलकर राख हो जायेगी।

वह बतायेगी कि बोटी-बोटी नोच लेने
और
खून के बहने चूसने से
हर चीज बदलती व हर आखिरी श्वांसों में
एक ताजा शुरूआत होती जायेगी।
शोषण और पूंजीवाद ने जो काली पट्टी,
न्याय की देवी की आंखों में बांधी है।
वह मशाल उसे जलाकर राख कर देगी,
न्याय का तराजू, जब तक न समान होगा –
वह मशाल नहीं बुझेगी, नहीं रूकेगी।
(27/5/1993)

"इन्कलाबी सर्वहारा" (करूआ चौराहा, पुरानी बस्ती, बस्ती, उत्तर प्रदेश) के जुलाई 93 अंक में छपे एक लेख की भावना से पाठकों को अवगत कराने के लिये उसका एक अंश हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

.... देशों की, राष्ट्रों की कूपमण्डूकी "आत्म निर्भरता" पूंजीवादी विश्व व्यवस्था से मेल नहीं खाती। इस आत्म निर्भरता का स्थान चौमुखी परस्पर निर्भरता ने ले लिया है और इस तथ्य से इनकार किसी बड़े से बड़े कुतर्की के लिये भी सम्भव नहीं है।

तब फिर "देश" की चिन्ता में मरी जा रही इस पूंजीवादी नेतृत्व मण्डली द्वारा "गुलामी के खतरे", "देश हित", "देश भक्ति", "देश की मजबूती", "देश के विकास", "आत्म निर्भरता" आदि-आदि फिकरों के बहाने जनसाधारण को गुमराह करने के पीछे वास्तविक मकसद क्या है? ये किसकी आजादी की सुरक्षा के लिये चिन्तित हो कर गुलामी के खतरे से आगाह करने की बांग दे रहे हैं? क्या भारत के भौगोलिक भूखण्ड : उसकी मिट्टी नदियों-पहाड़ों-पठारों-मैदानों-जंगलों आदि की ? क्या पशु-पक्षियों, जानवरों और कीट-पतंगों की? या, इस सब के साथ इस देश में बसने वाली आबादी की? यदि बात यहां बसने वाली आबादी की आजादी की है तो तथ्यों और वास्तविकता पर एक सरसरी नजर डालने से ही बात साफ हो जायेगी। इस देश की 80 परसैन्ट जनता तो पहले से ही गुलामी का अमानुषिक जीवन जीने को बाध्य कर दी गई है।....

ऐसे में साथी तड़ित कुमार की कविता "दायरे" ("शुरूआत" में प्रकाशित) का एक अंश बरबस याद आता है –

तुमने सिखाया था कि
देश हमारी मां है,
लेकिन हम नहीं मानते।
महज जमीन का एक टुकड़ा –
जिसे हमने सींचा और तुमने लूटा है –
हम दोनों की मां नहीं हो सकता।
हम में से बहुतों की मांएं तो ऐसी भी हैं
जिन्हें तुमने वेश्यायें बना दी हैं,
तो क्या हमारे वे भाई
अपने देश को भी वेश्या कहें?
नहीं! देश न तो मां होता है और न वेश्या
देश महज एक दायरा होता है
जिसके भीतर रहने वालों का खून
कानून, पुलिस और सेना के सहारे तुम
आखिरी कतरे तक चूस सकते हो।
तुम्हारे ही जैसे लोगों ने
पूरी दुनियां को
अलग-अलग दायरों में बांट लिया है
अपनी सुविधा के लिये
और
उन्हें देश की संज्ञा दे दी है
फिर उसे मां के नाम से जोड़ दिया है
ताकि उसके गर्भ में पलते
रक्तबीजों की भ्रूणहत्या
तुम्हारे लिये आसान हो जाये।

कैद में मजदूर

★अमरीका में टेनेसी प्रान्त के चट्टानुगा शहर में पुलिस हिरासत में 23 लोगों की मृत्यु हो चुकी है लेकिन किसी भी मामले में मार-पीट करके हत्या करने के लिये पुलिस के खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई है। 5 फरवरी 93 को पुलिस की हिरासत में लैरी पावेल की मृत्यु हो गई। इस मामले में नस्ल का पहलू भी जुड़ गया और मार-पीट करने वाले 8 पुलिसवालों पर मुकदमा चलाने से न्यायाधीश पीट ने इनकार कर दिया।

नागरिकों के एक संगठन ने पुलिस दमन और न्याय विभाग के अन्याय के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों का एक सिलसिला आरम्भ किया। 23 मार्च को "पुलिस यादगार दिवस" के मौके पर नागरिकों के विरोध प्रदर्शन को 400 हथियारबन्द पुलिस वालों ने रोका। पर्चों-पोस्टरों-पुस्तिकाओं को पुलिस ने जब्त किया और लोगों को गिरफ्तार कर लिया। आठ प्रदर्शनकारी जून के आरम्भ में भी जेल में बन्द थे। हत्या का विरोध करने वालों पर हत्यारों ने मुकदमें दर्ज कर दिये हैं।

पुलिस की क्रूरता के खिलाफ और अपनी बात कहने की स्वतन्त्रता के लिये चट्टानुगा में नागरिकों का आन्दोलन जारी है।

(जानकारी हमें वरकर्स सोलिडेरिटी एलायन्स से प्राप्त हुई है।)

★फरवरी 15-16 को जूट और टैक्सटाइल मजदूरों की हड़ताल तथा बन्द के दौरान बंगलादेश में पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों ने बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां की थी और उनकी कार्रवाई में एक मजदूर मारा गया था। अप्रैल के अन्त में भी 130 गिरफ्तार मजदूर जेल में बन्द थे। इन मजदूरों को आतंकवाद-विरोधी कानून के तहत गिरफ्तार किया गया है। जमानत का इस कानून में प्रावधान नहीं है। सजा होने पर आतंकवाद-विरोधी कानून में मौत की सजा का प्रावधान है। बंगलादेश सरकार की इस आतंकवादी कार्रवाई के खिलाफ कई देशों में मजदूर आवाज उठा रहे हैं।

★पोलैन्ड में सरकार ने फौज में काम करने से इनकार करने वाले तीन मजदूरों को जेल में बन्द कर दिया। पोलैंड सरकार की इस कार्रवाई के खिलाफ कई देशों में मजदूरों ने आवाज उठाई है। फरीदाबाद के कुछ मजदूरों ने भी पोलैंड सरकार को विरोध-पत्र भेजा। एक गिरफ्तार मजदूर रिहा कर दिया गया है पर दो अभी भी जेल में बन्द हैं।

★नाइजीरिया में गत वर्ष मजदूर आन्दोलनों की लहर के दौरान सरकार ने कई वरकरों को गिरफ्तार किया। महीनों जेल में बन्द रहने के बाद ही मजदूर जमानत पर छूट पाये और केस अभी चल रहे हैं। दुनियां के कई देशों में मजदूरों ने नाइजीरिया सरकार की इस कार्रवाई के खिलाफ आवाज उठाई है और फरीदाबाद के कुछ मजदूरों ने उसमें अपनी आवाज मिलाई है।

★भिलाई में जून 92 में आन्दोलनरत मजदूरों पर पुलिस फायरिंग में 16 मजदूर मारे गये थे। कर्फ्यू और गिरफ्तारियों का सिलसिला चला था। गिरफ्तार लोगों में से तीन अभी भी जेल में बन्द हैं।

कलह और तनाव

अमरीका में मिशिगन प्रान्त में डियरबोर्न नगर में 6 मई को 24 वर्ष की सर्विस वाले एक पोस्टल वरकर ने गोली मार कर अपने एक सहकर्मी की हत्या कर दी और एक सुपरवाइजर व एक क्लर्क को घायल कर दिया। फिर उसने अपने गोली मार कर आत्महत्या कर ली।

गोलियां चलाते समय वह वरकर चीख रहा था, "समय आ गया है कि सुपरवाइजरों को एक सबक सिखाया जाये।"

पिछले छह साल में ही अमरीका में डाकघरों में पोस्टल वरकरों द्वारा गोलीबारी में डाक विभाग के 36 कर्मचारी मारे गये हैं। सरकारी रिपोर्ट तक डाक विभाग में निरंकुशता एवं अत्याधिक फौजी ढंग की सख्ती की चर्चा करती है। जबकि आम मान्यता है कि पोस्ट आफिस की नौकरी फैक्ट्री में नौकरी से आसान है।

अमरीका में डाक विभाग सरकारी है और इसमें सात लाख पचास हजार मजदूर काम करते हैं। अगस्त 92 से मई 93 के दौरान 48 हजार पोस्टल मजदूरों की छंटनी हो चुकी है जबकि डाकखानों में काम-काज लगातार बढ़ रहा है। बड़े पैमाने पर छंटनी और वर्क लोड वृद्धि के लिये डाकखानों के प्रायवेटकरण की चर्चा गरम है।

आर्टिस्ट वरकर

अमरीका में मिनियापोलिस शहर में मिन्नेसोटा ओपेरा आर्केस्ट्रा मैनेजमेंट की छंटनी स्कीम के खिलाफ 30 अप्रैल से 55 संगीतज्ञ हड़ताल पर हैं। मैनेजमेंट ने हड़ताल-तोड़कों की भर्ती करके प्रोग्राम जारी रखने की कोशिश की। इस पर इलेक्ट्रिशियन, कैन्टीन वरकर, साज-सज्जा वरकर, कास्ट्यूम वरकर तथा टिकट कलेक्टर भी हड़ताल में शामिल हो गये।

मजदूरों के जीवन में कार्यस्थल का सर्वोपरि महत्व है। कहीं भी कार्यस्थल पर खुला प्रवेश नहीं है। दीवारों-कांटेदारों तारों के समान ही नौकरी का मिलना अथवा नहीं मिलना कार्यस्थल में प्रवेश को निर्धारित करते हैं। कार्यस्थल में प्रवेश करते ही वर्किंग कंडीशनों का महत्व उजागर हो जाता है। कार्यस्थल पर अपने हितों के प्रति मजदूरों की चौकसी अथवा लापरवाही मजदूरों के जीवन-स्तर पर तो महत्वपूर्ण असर डालती ही है, कार्यस्थल पर होने वाले तथाकथित ऐक्सीडेन्टों की संख्या और घातकता के स्तर पर भी इनका भारी असर पड़ता है। डर अथवा लापरवाही की वजह से कार्यस्थल पर वर्किंग कंडीशनों पर मजदूरों की चुप्पी का नतीजा अक्सर नामनिहाद के ऐक्सीडेन्टों में ढेरों में अंग-भंग और मौतों में निकालता है।

★दस मई को थाइलैंड की राजधानी बैंकाक के निकट नखोनपथम में खिलौने बनाने वाली एक विशाल फैक्ट्री में भयंकर आग से 300 मजदूर जल कर मर गये और बड़ी संख्या में घायल हुये। 5000 से ऊपर वरकरों वाली उस फैक्ट्री, कादेर इन्डस्ट्रीयल में अधिकतर वरकर महिला मजदूर हैं।

कादेर फैक्ट्री में वर्किंग कंडीशन : जगह की अत्याधिक कमी – फैक्ट्री के एक हिस्से में छह लाइनों में नब्बे-नब्बे सिलाई मशीनें लगी हैं जहां कन्धों से कन्धे सटाये 500 महिलायें काम करती हैं; प्लास्टिक और कपड़ों के जगह-जगह ढेर; चोरी रोकने के नाम पर फैक्ट्री गेट पर ताला।

10 मई की आग के समय गेट पर ताले की वजह से मजदूर बाहर नहीं निकल पाये। आग से बचने के लिये कई वरकर तीसरी मंजिल से नीचे कूदे।

इस नामनिहाद की दुर्घटना-ऐक्सीडेन्ट के बाद कादेर मैनेजमेंट के प्रतिनिधि ने कहा : चूंकि फैक्ट्री में पांच हजार से ज्यादा मजदूर काम करते हैं इसलिये मरने वालों की संख्या "परसैन्टेज-प्रति सैंकड़ा" के हिसाब से अधिक नहीं है।

★दक्षिण अफ्रीका में 13 मई को ओकने के निकट सोना खदान में 2,200 मीटर ऊपर से पत्थर गिरा – 5 मजदूर इस "ऐक्सीडेन्ट" में मर गये। 15 मई को सेकुन्डा के पास मिडलबुल्ट कोयला खदान में मीथेन गैस का विस्फोट हुआ – इस "ऐक्सीडेन्ट" में 53 मजदूर मरे। इस वर्ष जनवरी-जून के बीच दक्षिण अफ्रीका में खदानों में ऐसी नामनिहाद की दुर्घटनाओं में 220 मजदूर मरे हैं और 2000 घायल हुये हैं।

फरीदाबाद मजदूर समाचार के हम लोग थाईलैंड और दक्षिण अफ्रीका में मृत मजदूरों के प्रियजनों के दुख में शरीक हैं।

प्रकाशित

मजदूर आन्दोलन की एक झलक

200 पेज, पचास रूपये

यह किताब फरीदाबाद मजदूर समाचार में पिछले पांच साल में प्रकाशित सैद्धान्तिक लेखों, विश्लेषणों और रिपोर्टों का सम्पादित संकलन है। इस पुस्तक में मजदूर आन्दोलन की सतत प्रक्रिया के एक अंश के जरिये इस आन्दोलन की हकीकत, मजदूर वर्ग की कमजोरी व ताकत तथा समस्याओं व सम्भावनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

किताब में चर्चित विषय हैं:

- **फरीदाबाद की फैक्ट्रियों के घटनाक्रम का विस्तृत वर्णन।**
- **भारत के औद्योगिक क्षेत्रों के घटनाक्रम का विश्लेषण।**
- **अन्य देशों में मजदूर आन्दोलन की रिपोर्टें।**
- **राजनीतिक- सामाजिक विश्लेषण।**

यह किताब मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद- 121001 से प्राप्त की जा सकती है। डाक द्वारा पुस्तक मंगाने के लिये शेर सिंह, सम्पादक फरीदाबाद मजदूर समाचार के नाम 55 रूपये का बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर भेजें।

ट्रूव्हील्स का फाल्सहुड

12/2 मथुरा रोड़ स्थित ट्रूव्हील्स फैक्ट्री में आयशर, एस्कोर्ट्स, फोर्ड आदि ट्रैक्टरों के रिम बनते हैं। साढ़े सात साल पहले इस फैक्ट्री में प्रोडक्शन चालु हुआ था। अब यहां 80 परमानेन्ट वरकर, 4 ठेकेदारों के 325 वरकर और 40 का स्टाफ काम करते हैं। ट्रूव्हील्स में प्रोडक्शन लगातार बढ़ रहा है : 90-91 में 3 हजार रिम सैट, 91-92 में 5 हजार तथा 92-93 में 8 हजार रिम सैट बने। और इन तीन वर्षों में मजदूरों की संख्या घटाई गई है।

मजदूरों को हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी ट्रूव्हील्स फैक्ट्री में नहीं दिया जा रहा। स्थाई कार्य होते हुये भी ठेकेदारी प्रथा जारी रखी जा रही है। नौकरी देते समय 5-7 कोरे कागजों तथा टिकट लगे वाउचरों पर मजदूर से मैनेजमेंट हस्ताक्षर करवा लेती है। मजदूर जब अपनी शिकायत श्रम विभाग कार्यालय में ले कर जाते हैं तब अक्सर श्रम अधिकारी गायब मिलते हैं।

इधर ट्रूव्हील्स मजदूरों ने संगठित होने की पुनः कोशिश की है जिससे मजदूरों और मैनेजमेंट के बीच रस्सा-कस्सी तेज हो गई है।

ट्रूव्हील्स मैनेजमेंट ने 11 परमानेन्ट वरकर सस्पैन्ड कर दिये हैं। 4 मजदूरों को पुलिस से गिरफ्तार करवाया और उन पर मुकदमे बनवा दिये हैं। ट्रूव्हील्स मैनेजमेंट की ही बम्बई स्थित एम फोर्ज फैक्ट्री में कुछ स्थाई श्रमिकों के स्थानान्तरण की कार्रवाई आरम्भ कर दी है।

ट्रूव्हील्स मजदूरों ने 22 जून को जनरल डिमान्ड नोटिस दिया है। मैनेजमेंट डिमान्डों पर बात करने को तैयार नहीं है और श्रम एवं समझौता अधिकारी ने 6 जुलाई की तारीख दी है। 25 जून को मजदूरों का जलूस 19 सैक्टर से मथुरा रोड़ होते हुये 15 सैक्टर में डी एल सी दफ्तर, 9 सैक्टर में श्रम एवं समझौता अधिकारी सर्कल I दफ्तर तथा सैक्टर 15 में एस पी दफ्तर गया। एस पी दफ्तर में डी सी से बातचीत भी हुई। इसके बाद 28 जून को ट्रूव्हील्स मजदूरों ने डी एल सी दफ्तर पर दिन-भर का धरना दिया। फैक्ट्री में काम करना जारी रखते हुये जलूसों और धरनों का कार्यक्रम है।

ट्रूव्हील्स के मजदूर सही पहिये बना रहे हैं और मैनेजमेंट की फाल्सहुड-झूठ का मुकाबला कर रहे हैं।

एक गांव में

सहारनपुर जिले में पठेड़ एक बड़ा गांव है। पठेड़ में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिये चल रहे आन्दोलन के तहत 31 मार्च से धरना चल रहा है। 22 जून को पठेड़ में एक शराब विरोधी आन्दोलन हुआ जिसमें आस-पास के 12 गांवों के लोग शामिल हुये। हमेशा बुरके में रहने वाली नसीमा ने उस दिन बुरका उतार दिया। औरत को हर वक्त बुरके में रहने की हिदायत देने वाले भी उस दिन नसीमा को बड़े गौर से सुन रहे थे। नसीमा और उसकी कई सहेलियां धरने पर बैठती हैं।

पठेड़ से शराब का ठेका हटवाने के लिये 26 जून को 250 महिलायें सहारनपुर जिला अधिकारी के पास गई। पुलिस ने लाठी चार्ज किया, आठ महिलायें सहारनपुर अस्पताल में भर्ती हैं।

जिलाधिकारी कहते हैं कि पठेड़ का ठेका बन्द करने से सरकार को सालाना छह लाख रूपये का घाटा होगा। सहारनपुर जिले के ठेके 17 करोड़ रूपये में उठे हैं और यह सब ठेके गरीबदास नाम के किसी व्यक्ति ने लिये हैं।

(सामग्री हमने दिशा सामाजिक संगठन और नवभारत टाइम्स से ली है।)

''श्रमिक समाचार'' (सुश्री शकुन्तला दास, डी 822 सैक्टर 20, राउरकेला – 769005, उड़िसा) के जून 93 अंक से कुछ रिपोर्ट प्रस्तुत हैं –

★मई 18 को राउरकेला के निकट एक पत्थर खदान में दो मजदूर, शिवम मुन्डा और रामेश्वर दास, जिन्दा दफन हो गये। यह खान तहसीलदार ने उड़िसा के एक मन्त्री के रिश्तेदार को लीज पर दी हुई है। ऐक्सीडेन्ट के बाद ठेकेदार फरार है। प्रश्न उठते हैं : मजदूरों की मौत के लिये जिम्मेदार कौन है? कम्पनसेशन किस से मांगें? क्या इसे भाग्य का खेल समझ कर ऐसे ही छोड़ दिया जाये?

★मई 14 को राइरकेला के पास आई डी एल केमिकल फैक्ट्री में एक महिला मजदूर पर आक्रमण हुआ। उसे गम्भीर चोटें आई और 21 मई को अस्पताल में उसकी मृत्यु हो गई। घटना के विरोध में मजदूरों ने 5 दिन फैक्ट्री में काम बन्द रखा।

★अस्पतालों में सुविधायें घट रही हैं और मरीजों की संख्या बढ रही है। इस वजह से डाक्टरों और मरीजों के बीच तनाव बढ़ रहा है। डाक्टरों के साथ मार-पीट की घटनायें सामने आने लगी हैं। ऐसी घटनाओं के विरोध में उड़िसा में डाक्टरों ने 26 मई को हड़ताल की।

समीक्षा

शहीद शंकर गुहा नियोगी यादगार समिति और लोक साहित्य परिषद (शहीद अस्पताल, पोस्ट - दल्ली राजहरा, दुर्ग-491228, मध्य प्रदेश) द्वारा प्रकाशित शंकर गुहा नियोगी लिखित ''किरन्दुल की अग्निगर्भ से'', 14 पेज, 2 रूपये।

बैलाडीला लोहा पत्थर खदानों में छंटनी के खिलाफ संघर्षरत मजदूरों पर जनता पार्टी सरकार के समय अप्रैल 1978 में पुलिस ने भयंकर अत्याचार किये थे। 5 अप्रैल को पुलिस की गोलीबारी में कई महिला और पुरूष मजदूर मारे गये थे। पुलिस ने मजदूरों की 3500 झोंपड़ियों में आग लगा दी थी। बड़े पैमाने पर बलात्कार किया गया था। कई दिन क्षेत्र में कर्फ्यू लगाया गया था।

उपरोक्त घटना का एक विस्तृत एवं भावनापूर्ण वर्णन शंकर गुहा नियोगी ने तब किया था जिसे मई 93 में पुनः मुद्रित किया गया है। नियोगी के यह शब्द, ''गोलीकांड के बाद काफी दिन बीत गये हैं। देश-भर में धिक्कार हो रहा है। विभिन्न पार्टी के नेतागण नालन्दा के ध्वस्त स्तूप की भांति किरन्दुल पर्यटन पर आ रहे हैं। परन्तु कोई भी वर्तमान आतंक के वातावरण को हटाने के लिये कदम नहीं उठा रहे हैं।'', कहीं भी पुलिस गोलीकांड के बाद की घटनाओं का सटीक व सामान्य-सा वर्णन लगते हैं। घटना-विशेष में पैठ कर प्राप्त की गई व्यापक स्पष्टता वाला यह पहलू इस लेख को विचारणीय बनाता है।

प्रकाशक अगर छत्तीसगढ़ क्षेत्र में मजदूरों पर हुये समस्त गोलीकांडों का संकलन प्रकाशित कर सकेंगे तो यह मजदूर आन्दोलन में एक योगदान होगा।

ओसवाल मजदूरों का खत

ओसवाल इंजिनियरिंग एण्ड आटोकास्ट एनसिलिरी प्राइवेट लिमिटेड, 48 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद में 1-1-92 को हमने 1990 और 1991 का बोनस मांगा। मैनेजमेंट ने रात को फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी। दो महीने तक तालाबन्दी जारी रही। फिर लेबर डिपार्टमेंट में कुछ मजदूरों की छंटनी तय करके फैक्ट्री खोली। निकाले जाने वाले मजदूरों को हिसाब देने का समझौता हुआ था। दो साल बाद भी छंटनी किये गये मजदूरों को हिसाब नहीं दिया है। लेबर डिपार्टमेंट में जाते हैं तो वहां यही कहते हैं कि मैनेजमेंट के पास पैसे नहीं हैं तो हम क्या करें। लेबर कोर्ट से यह शब्द सुनने को मिलते हैं।

फैक्ट्री में 40-45 कर्मचारी हैं। काम नहीं है कह कर कर्मचारियों का जब-तब ले आफ लगा दिया जाता है और मैनेजमेंट अपने चमचों से रात को काम करवाती है। ले आफ का पैसा समय पर नहीं दिया जाता। दो साल से यह चल रहा है।

लेबर डिपार्टमेंट में शिकायत करने पर मैनेजमेंट तारीख पर पहुंच जाती है और टेबल के नीचे हाथ गर्म करके चल देती है। साहब लोग बोल देते हैं कि हमने आपका फैसला कर दिया। फैसला क्या करते हैं यह लेबर कोर्ट वालों को और मैनेजमेंट को ही पता रहता है।

ई एस आई में जाते हैं तो वहां भी कहते हैं कि आपकी ई एस आई जमा नहीं हो रही, आपको दवाई नहीं मिलेगी। यही हाल प्रोविडेन्ट फन्ड का है।

कर्मचारी करें तो क्या करें, उनकी तो कोई सुनता ही नहीं है।

प्रिसीजन स्टैम्पिंग

24 सैक्टर की इस फैक्ट्री में मैनेजमेंट नई भर्ती के नाम पर मध्य-जून में 18-20 लोगों को फैक्ट्री में ले गई। तीन दिन में ही पी-वी कर आपस में मार-पीट करके वे लोग फैक्ट्री से बाहर हो गये। स्टाफ ड्यूटी कर रहा है।

इधर मजदूर भी 26 मई से फैक्ट्री गेट पर ताशों में मशगूल हैं और कागजी घोड़ों पर, कोर्ट-कचहरी-साहबों पर आस लगाये बैठे हैं। इन हालत में फैक्ट्री गेट से पुलिस भी हटा ली गई है।

(आटो लैम्प का बाकी)

भी बन्द कर दिया है। लेबर डिपार्टमेंट को इसकी शिकायत मजदूरों ने की है पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ा है।

पिछले वर्ष आटो लैम्प मैनेजमेंट ने मजदूरों के आन्दोलन को दबा कर 13 मजदूर नौकरी से निकाले थे। मजदूरों को लगता है कि मैनेजमेंट फैक्ट्री से परमानेन्ट वरकर निकाल कर कैजुअल व ठेकेदारों के वरकरों को रखना चाहती है।

सूचना

डाक से साल- भर अखबार प्राप्त करने के लिये 15 रूपय बैंक ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा शेर सिंह, सम्पादक फरीदाबाद मजदूर समाचार के नाम से मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद 121001 के पते पर भेजें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेरसिंह के लिए जे के ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73